उपसंहार

हिंदी कहानी में पिछले ाार दशकों से भी अधिक समय से प्रेम ांद की पारदर्शी यथार्थवादी परंपरा में लिखने वालों में शेखर ोशी का स्थान-शीर्ष है। 'नई कहानी' के अधिकांश कहानीकारों की तरह शेखर ोशी ने 54-56 के आस पास लिखना शुरू किया था। 'नई कहानी' के दौर के कहानीकार आज़ादी के उपरांत की स्थिति से असंतुष्ट थे। इसीलिए उनकी कहानियों में कुंठा, हताशा, संत्रास, एकाकीपन तथा सेक्स आदि विषय प्रमुख रूप से ित्रित हैं और पूरी प्रामाणिकता तथा संवेदनशीलता के साथ नई कहानी को स्थापित कर पाने में सफल भी हुए। मगर उस समय भी कुछ कहानीकार दबे-पिछड़े संघर्षरत लोगों की ीवन स्थितियों के यथार्थ-ित्रण को अपनी कहानियों का विषय बनाया। इस परंपरा के कहानीकारों में शेखर ोशी प्रमुख हैं।

शेखर ोशी का ान्म उ ा सामंती और रू.-परंपराओं वाले परिवार में होने पर भी वे हमेशा आम आदमी के साथ खड़े होते हैं। यह अकस्मात नहीं है। बल्कि उन परिस्थितियों व अग्र ा लेखकों से मिली प्रेरणा की उप ा है ि न्हें उन्होंने आ ीवन देखा, भोगा और आत्मसात् किया है। गोर्की, राहुल, प्रेम ांद, यशपाल आदि की र ानाओं से मिली प्रेरणा के कारण उन्होंने परिवार की सामंती और रू. वादी मान्यताओं से मुक्ति पाया है।

साहित्य में उनका प्रवेश वास्तव में 'कोसी का घटवार' नामक कहानी से हुआ था ो हैदराबाद से निकलने वाली 'कल्पना' नामक पत्रिका के ानवरी

1957 ई. के अंक में प्रकाशित हुई थी। इसी कहानी से उनको विशेष ख्याति मिली। आरंभ से लेकर अब तक उन्होंने कुछ साठा कहानियों से यादा लिखी हैं। उनकी कहानी स ामु ा में 'शार्ट स्टोरी' होती है। इसलिए विभिन्न संकलनों में दोहराई ाने के बाव ूद उनके नौ संकलन हैं। वासतव में शेखर ोशी के लेखन की शुरुआत कविताओं से हुई और फिर मूलतः कहानियों पर केंद्रित रही। उनकी ि ास कहानी ने लोगों का ध्यान सब से यादा खीं ा था, वह थी 'कोसी का घटवार' और उसके कुछ दिनों बाद प्रकाशित कहानी 'बदबू' ये दोनों कहानियाँ उस दौर की सर्वाधिक ि ति कहानियों में से थी। सहसा इतनी ि ति हुई और आ ा भी प्रासंगिक बन गई हैं।

इनकी अधिकांश कहानियों की पृष्ठभूमि पर्वतीय ीवन और औद्योगिक परिवेश रही है। इसके साथ उन्होंने शहर के निम्नमध्यवर्ग और मध्यवर्गीय ीवन को अपनी गहरी संलग्नता से उद्घाटित किया है। उन्होंने रो ामर्रा के गैर ारूरी से लगते, छोटे-छोटे विषय की बड़ी कहानियों को रूप दिया है। इनकी कहानियाँ, संभवतः हिंदी कहानी में पहली बार, औद्योगिक परिवेश के ीवन की दस्तक देती हैं।

शेखर ोशी की शुरुआत की अधिकांश कहानियाँ 'सह ा' ही नहीं आसान किस्म की कहानियाँ हैं। लेकिन उनकी आसानी में सह ाता ि ास तरह शामिल है-वह उस आसानी को आसान नहीं रहने देती। उनकी 'दा यु' कहानी एक हद तक भावुकता से ग्रस्त है। लेकिन भावुकतापूर्ण कहानी होकर भी 'दा यु' भावुकता को रेखांकित नहीं करती। वह खौफनाक वर्ग भेद ो अपने घर परिवार और प्रदेश के आदमी को भी अपना आदमी नहीं रहने देता और इस तरह आदमी को आदमी नहीं रहने देता। 'दा यु' कहानी में वर्ग-भेद या वर्ग ारित्र का कोई फार्मूला नहीं है। वह बेहद-सह ा तथा आसान किस्म की

कहानी है पर उस दौर की सारी कहानियों में वर्ग भेद की वास्तविकता को इतनी सह ाता के साथ उ ागर करनेवाली कोई अन्य कहानी नहीं मिलती।

शेखर ोशी की कहानियों में शिल्प और संवेदना के अंतःसंबंधों की सुरम्य र ाना के साथ ीवन और समा ा के सह ा उन्नयन एवं परिवर्तनकारी दृष्टि के प्रति दायित्वबोध साफ दृष्टिगो ार होता है। कथात्मक गठन में भाषा के सूक्ष्म उपयोग का उन ैसा आधुनिक बोध हिंदी कहानी में अपरि ित है। उनकी कहानियों में अक्सर पहला वाक्य बड़ा अर्थवान होता है। लेकिन उसकी अर्थवत्ता का पता कहानी के अंत में ालता है। 'कोसी का घटवार' में पहला वाक्य है 'गुसाई का मन ि लम में नहीं लगा' पन ाक्की के घटवार की उदासी का संकेत है यहाँ और वही कथा का केंद्र बिंदु भी है।

शेखर ोशी यथार्थ और पाठक के बी ा एक गैप छोड़ते हैं। एक अंतराल रहता है ि ासमें आदर्श और यथार्थ दोनों की गुं ाइश रहती है। वह कहानियों में टिप्पणियाँ करने से ब ाते हैं। शब्दों के मामले में मितव्ययी हैं। इसीलिए यथार्थ और पाठक के बी ा के अंतराल के कारण उनके यहाँ 'बोला' ि ातना महत्वपूर्ण है, उतना ही अबोला भी। पहले वह पाठक को अपनी विश्वसनीयता की गिरफ्त में लेते हैं और फिर उसे निष्कर्ष पर पहुँ ाने के लिए छोड़ देते हैं। अत्यन्त सह ा और ठंडी भाषा के माध्यम से ये कहानियाँ हमारे समक्ष ि ास यथार्थ का उद्घाटन करती हैं, उसके पीछ समकालीन ान ीवन की बहुविध विडंबनाओं को महसूस किया ा सकता है। सपनों की वास्तविकता से अपरि ित ब ों की खुशी हो या बिरादरी की दलदल में फँसे व्यक्ति की मनोदशा लेखकीय दृष्टि उन्हें एक अर्थ-गांभीर्य से भर देती है। उसके पास आदर्शवादी निर्णय है तो उनके सामने खड़ा कठोर और भयावह यथार्थ भी है।

शेखर ोशी की अनेक कहानियाँ एक अर्थ में आँ ालिक कहानियाँ भी हैं। उनकी कहानियों का कथां ाल अलमोडा पहाड़ के आस-पास के गाँव हैं। आँ ालिक कहानियों में अं ाल का प्राकृतिक परिवेश के ित्रण के बिना अं ाल का स ाीव ित्रण संभव नहीं हो सकता इसीलिए शेखर ोशी अपनी आँ ालिक कहानियों में प्रकृति-ित्रण को विशेष स्थान दिया है। उन्होंने ांगलों का, पशु-पक्षियों का, पेड़-पौधों का, सूर्य- ांद्र का, पर्वतों-नदी, नालों आदि का सुंदर सह ा ित्रण किया है। िास से उस अं ाल का प्राकृतिक परिवेश पाठकों के सामने आता है। 'कोसी का घटवार' ैसी कहानियाँ अपनी आं ालिकता के कारण ही विशेष रूप से ाित हुई थीं। लेकिन इसमें आँ ालिक कहानी का व्याकरण नहीं मिलेगा। इस रूप में वह आं ालिक कहानी भी नहीं। बल्कि स्मृति से टटोलें तो उसकी परंपरा के अवशेष भटकते भटकते 'उसने कहा था' से ाा ुड़ेंगे। वैसी ही भावुकता भरी स्मृतियाँ की कहानी, वैसा ही फौ ाी टाट।

उस अं ाल की पहाड़ी गाँवों में व्याप्त ाातिगत भेद-भाव को हम समर्पण, गलता लोहा, हलवाहा आदि कहानियों में देख सकते हैं। 'समर्पण' कहानी का दुकानदार ाति भेद के कारण निम्न ाति के ब ुवा को गिलास धो लाने का आदेश देता है। कुछ लोग उ ा ाति के अधिकारों को स्वीकार करने के लिए तैयार हो ाते हैं ैसे 'गलता लोहा' कहानी का धनराम। वह मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं सम ाा बल्कि वह इसे मोहन का अधिकार ही सम ाता रहा था। क्योंकि मोहन एक ब्राह्मण हैं। इसी प्रकार अपनी ाति के प्रति प्रेम भाव 'समर्पण' कहानी के ब ुवा पात्र में देख सकते हैं। वह अपनी बिरादरी के ही एक व्यक्ति के क्रिया कलाप देखकर आश ार्य ाकित होता है।

शेखर ोशी ने अं ाल के वर्गगत भेदभाव का ित्रण 'दा यु, गलता लोहा, हलवाहा' आदि कहानियों में किया है। गाँव के लोग बड़े अंधविश्वासी होते हैं। भूत-प्रेत, ादू-टोना पर अधिक विश्वास करते हैं। इस प्रकार की सामाि ाक व्यवस्था अं ाल को विशिष्टता प्रदान करती है। इससे उस विशिष्ट अं ाल का परि ाय मिलता है। शेखर ोशी की कहानियों में वर्णित ग्रामीण समा ा में अनेक प्रकार के व्यक्तियों के होते हुए भी कोई व्यक्ति विशेष रूप से प्रमुख नहीं है। कहानियों में कई पात्रों की प्रधानता होने पर भी कोई नायक नहीं है वह केवल उस अं ाल की सामाि ाक व्यवस्था के अंग मात्र हैं। वह सामाि ाक व्यवस्था विशिष्ट अं ाल के पहाड़ी गाँव के ान- ीवन का ही परि ाय देती है।

अल्मोडा पहाड़ी अं ाल में ीनेवाले निम्न मध्यवर्ग और मध्यवर्ग के लोग विभिन्न पेशे के लोग हैं ैसे-हलवाहा, शिल्पकार, घटवार, बॉय (होटल में काम करनेवाला) फोटोग्राफर (Photographar), लोहार, कथाकार, मछलीवाला, मूंगफलीवाला आदि। निम्नमध्यवर्ग के होने के कारण आँ ालिक कहानियों में आर्थिक दबाव विशिष्ट रूप से दिखाई देता है। 'सिनारियो' कहानी में आमाँ की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। उसके पास माि ास खरीदने के लिए भी पैसा नहीं है। इसीलिए वह सरुली को किसी और के मकान से अंगारे तुषार माँग कर लाने के लिए भे ाती है। 'हलवाहा' कहानी के ीवानंद को म ादूरी पर हलवाही करवाने की क्षमता न होने के कारण वह स्वयं हल ालाता है। इस प्रकार शेखर ोशी अपनी अनेक कहानियों में उस अं ाल की आर्थिक स्थिति का ित्रण बहुत ही संवेदनात्मक रूप में करते हैं।

आं ालिक कहानियों में किसी व्यक्ति विशेष की कथा नहीं होती। उसमें किसी अं ाल विशेष की समग्र अभिव्यक्ति होती है। इसलिए इन कहानियों में कोई व्यक्ति नायक नहीं होता बल्कि समस्त अं ाल ही यहाँ पर नायक के रूप में ित्रित होता है। शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित अं ाल अल्मोडा, अल्हड िले के पहाड़ी गाँव है। इसी पहाड़ी अं ाल को नायकत्व मिला है। उनकी कहानियों में एक-एक पात्र और उनके पेशे के द्वारा उस अं ाल की समस्या पर लेखक ने ोर दिया है। 'हलवाहा' कहानी में ीवानंद के द्वारा मध्यवर्गीय किसानों की समस्याओं को प्रतिपादित किया है तो 'गोपूली बुबु' नामक कहानी से उस अं ाल में वैद्य की कमी से हुए प्राण हानि को स्पष्ट करते हैं। इसी प्रकार 'गलता लोहा' कहानी से एक निम्न वर्गीय ब्राह्मण का बेटा नि ी ीवन में एक लोहार बन ाता है। इस प्रकार कहानियों में सारे पात्र उस अं ाल के अंग मात्र हैं। वास्तव में अं ाल ही नायक है।

शेखर ोशी ने उस अं ाल के लोगों के रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, पर्व-त्यौहार आदि का ित्रण अपनी कहानियों में किया है। अल्मोडा पहाड़ी अं ाल एक पिछड़ा हुआ व ृ देहात होते हुए भी भारत के पिछड़े हुए गाँवों या अं ालों का प्रतिनिधित्व करता है। एक प्रकार से आँ ालिकता प्रतीकात्मक स्तर पर क्षेत्रीय भी है। उन्होंने अं ाल विशेष की लोक भाषा का पात्रानुकूल प्रयोग किया है।

शेखर ोशी के सृ ानशील ीवन का बड़ा हिस्सा कारखानों में बीता है। इसीलिए उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर 'डांगरीवाले' कहानी संग्रह की कहानियों में कारखानों में होनेवाले वर्ग संघर्ष का स ीव ित्रण किया है। इनकी कई कहानियों में ैसे-दा यु, आखरी टुकड़ा, गलता लोहा,

डांगरीवाले, आशीर्व ान, सीि ़याँ, हलवाहा, बो ा, बंद दरवा ो खुली खिड़कियाँ, समर्पण आदि में वर्ग संघर्ष का ि ात्रण हुआ है।

समय एक गतिशील प्रक्रिया है ो निरंतर बदलती हुई आगे ब ़ती है। समय के साथ समा ा में भी अनेक परिवर्तन होते हैं। इन परिवर्तनों से कोई भी स ाग साहित्यकार अपरि ित नहीं रह सकता है। वह समय के साथ समा ा में हो रहे परिवर्तनों को अपने साहित्य के द्वारा पाठकों के सामने लाता है। इसी प्रकार शेखर ोशी ने युगीन समस्या को अपनी संपूर्ण ोतना और अनुभूति में उतारा है, इसमें संदेह नहीं। परिवर्तन की इस तीखी प्रतिक्रिया के कारण ही वे 'दा यु', 'कविप्रिया', 'कोसी का घटवार' और 'बदबू' ैसी श्रेष्ठ कहानियाँ लिख सके।

सन् 1950 से भारतीय समा ा में व्यापक परिवर्तनों का दौर शुरू हुआ था ैसे औद्योगीकरण, शहरीकरण और तकनीकीकरण। वास्तव में ये तीन क्रांतियाँ भारत में एक साथ प्रवेश की हैं और ये तीनों क्रांतियाँ एक दूसरे से संबंधित भी हैं क्योंकि उद्योग क्रांति के कारण औद्योगीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई है ि ासमें यांत्रिकीकरण का महत्वपूर्ण स्थान है। औद्योगीकरण की प्रक्रिया के साथ स्वभावतः शहरीकरण की प्रक्रिया शुरू होती है। इन तीनों के समग्र रूप को ही आधुनिकीकरण कहते हैं।

औद्योगीकरण के फलस्वरूप उप ाऊ ामीन कारखानों में बदलने लगी और किसान स्वयं म ादूर बनने लगे। उस समय की इस समस्या को शेखर ोशी 'आखरी-टुकड़ा' और 'हलवाहा' शीर्षक कहानियों के द्वारा पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं तो कारखानों में म ादूरों पर होनेवाले शोषण या ि ात्रण 'बदबू' और 'सीि ़याँ' कहानियों में करते हैं।

उद्योग क्रांति की व ाह से शहरीकरण का उदय हुआ है। रो ागार की तलाश में ग्रामीण लोग शहर आते हैं लेकिन गाँव या पहाड़ के प्रति उकना लगाव कम नहीं होता। इस विषय को 'व्यतीत' और 'टूटन' कहानियों में प्रस्तुत किया गया है। नौकरी और नई पीि.यों की सुविधाओं की व ाह से शहरी लोग वापस गाँव नहीं आ पाते परिणाम स्वरूप निराशा का शिकार बन ाते हैं। इस समस्या को उन्होंने 'विस ाि' और 'निर्णय' कहानियों में प्रस्तुत किया है। औद्योगीकरण, शहरीकरण और तकनीकीकरण से उत्पन्न समस्याएँ ैसे-पारिवारिक विघटन, बेरो ागारी आदि का ाित्रण अपनी कहानियों में दिखाते हुए उन समस्याओं का समाधान कविप्रिया, गलता लोहा ैसी अनेक कहानियों के द्वारा प्रस्तुत करते हैं।

सन् 1985 के बाद औद्योगिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है अब पेशे का आधार ाातिगत न रहकर व्यक्तिगत बन गया है। समय के साथ आये हुए इस महत्वपूर्ण परिवर्तन को उन्होंने 'हलवाहा' और 'गलता लोहा' कहानियों में प्रस्तुत किया है।

यही नहीं उन्होंने अपने समय की अनेक समस्याओं ैसे-बाल विवाह, ाकित्सा का अभाव, वर्ग संघर्ष, ाति और वर्गगत भेद-भावों का ाित्रण 'शुभो दीदी' 'गोपुली बुबु', 'दा यु', 'समर्पण' आदि कहानियों में किया है।

भारत की और एक महत्वपूर्ण क्रांति भूमंडलीकरण है ाि सकी शुरुआत सन् 1991 से मानी ा सकती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है ाि सका क्षेत्र समस्त भूमंडल है। अर्थात् इस प्रक्रिया के तहत स्वागत, प्रतिबंध या सीमाएँ नहीं होंगी। इस का यह भी अर्थ हुआ कि पश्ि ाम में विभिन्न स्वतंत्र राष्ट्रों के द्वारा अपनी प्रभुसत्ता के अधीन ो भौगोलिक सीमाएँ निर्धारित की गई थीं, उन्हें भूमंडलीकरण ुनौती देता है। इस प्रकार भूमंडलीकरण एक ऐसी भौगोलिक

प्रक्रिया है ो राष्ट्र-रा य की सीमाओं का अतिक्रमण करती है। भूमंडलीकरण के इस दौर में शोषण का रंग, रूप आकारहीन होता गया है। ि ासका शोषण होता है वे ही शोषक का पोषण करते हैं उसके पक्ष में लड़ते हैं। इस परिवर्तन का ि ात्रण शेखर ोशी 'बदबू' और 'बो ा' शीर्षक कहानियों में करते हैं।

भूमंडलीकरण द्वारा भारतीय समा ा में संर ानात्मक बदलाव आ ाुका है। पश्ि ाम की संस्कृति के आक्रमणकारी प्रभाव से भारतीय संस्कृति और सभ्यता बदल रही है। संस्कृति में आये हुए इन परिवर्तनों को हम विडुआ, डांगरीवाले, रंगरूट आदि कहानियों में देख सकते हैं। भूमंडलीकरण की व ाह से देशों के बी ा की दूरियाँ कम हो गईं। परिणामस्वरूप सारे संसार में हर एक देश अपनी ीाज़ों को कई देशों में बे ाने लगा। इस प्रकार भूमंडलीकरण ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे ीवन पर हावी कर दिया कि कोई भी वस्तु हाशिए पर नहीं रह ाती बल्कि इसके विपरीत वह ीवन का मुख्यांग बन ाती है।

'उपभोक्तावाद' का शिकार मध्यवर्ग है ो अपना व्यवहार तथा ीवन-शैली उ ातर बनाना ाहता है। मध्यवर्ग अब उपभोक्ता के रूप में आनंद के अनुभव को एक कर्तव्य मानने लगा है। वह खुश रहना ाहता है। केवल खुश रहना ही नहीं खुश दिखना भी ाहता है और गतिशील। एक अर्थ में वह पैसा ही प्रसन्नता का ि ह्न बन ाता है ो उसे वस्तुओं से मिलता है। यह उपभोग का 'आधीक्यीकरण' कहलाता है। उपभोक्तावाद के कारण समा ा के मध्यवर्ग में ो परिवर्तन आया है उसे शेखर ोशी ने 'डांगरीवाले' शीर्षक कहानी में सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है। उपभोक्तावाद के इस दौर में मूल्यों में बदलाव आया है। ीवन मूल्यों में बदलावों को

शेखर ोशी ने 'नारंगी बीमार है', ' ी ह ूरिया', 'परिक्रमा', 'किं करोमि ानार्दन', 'मेंटल' आदि कहानियों में प्रस्तुत किया है।

लेखक ने परिवर्तनों के साथ-साथ अनेक सामा ाक समस्याओं को भी अपनी कहानियों के द्वारा प्रस्तुत किया है ैसे अकेलापन, मृत्युबोध, पी ़ियों में अंतर, आपसी संबंध, असफल प्रेम, वृद्ध और विधवाओं की उपेक्षा आदि शेखर ोशी की कहानियों के माध्यम से हम तत्कालीन समा ा और समय का लेखा- ोखा प्राप्त कर सकते हैं। लेखक ने अपने समय के समा ा को और उसकी स्थितियों को अपने र ाना-संसार के माध्यम से प्रस्तुत करने का बीड़ा उठाया है। स ाग र ानाकार अपने समय और समा ा को न ार अंदा ा करके किसी महान् वृत्ति की र ाना नहीं कर सकता, बल्कि कोई बड़ा र ानाकार अपने समय और समा ा से ुड़कर ही महान बनता है। शेखर ोशी भी उनमें से एक हैं।

* * *